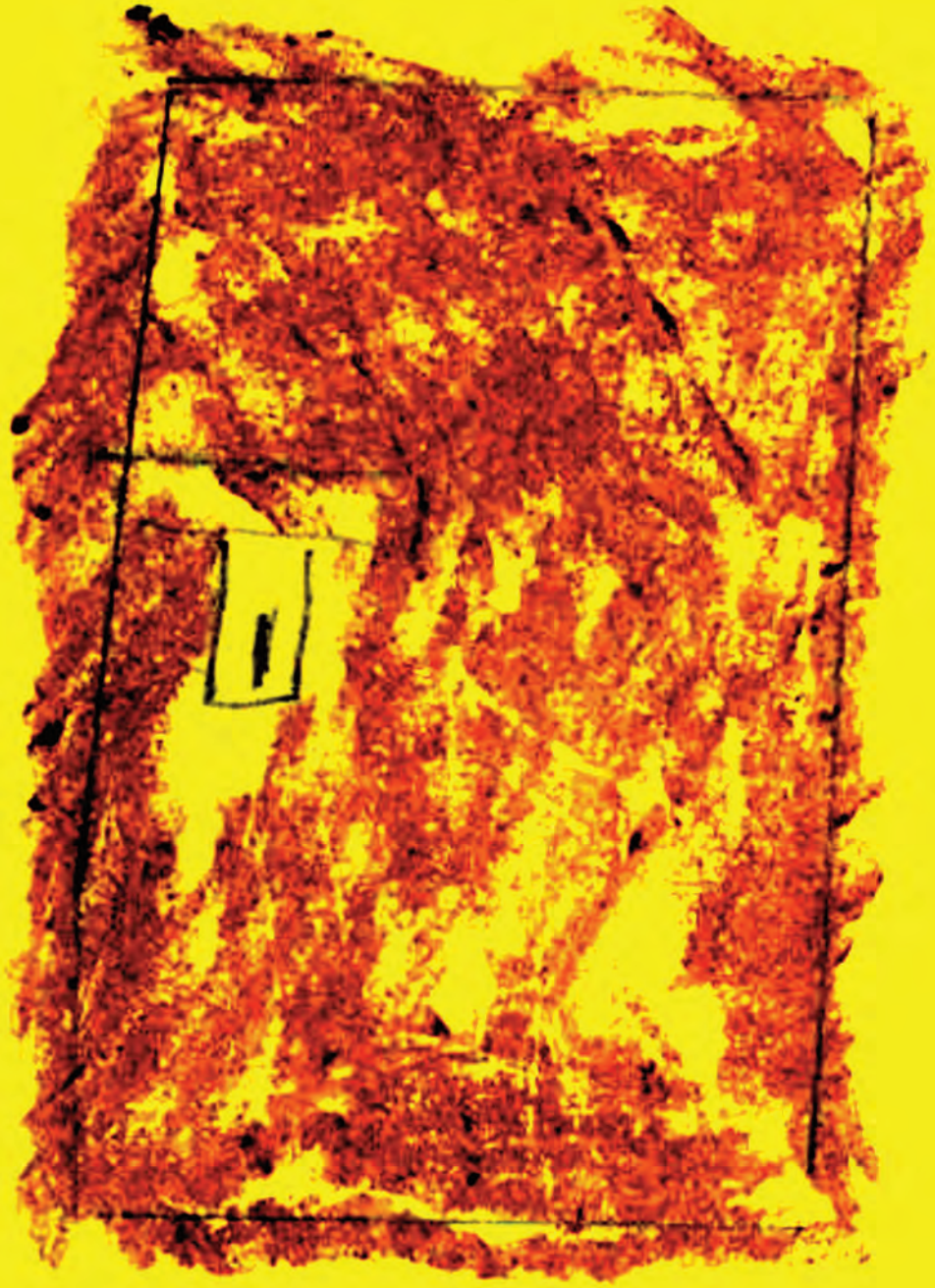

किवाड़

शोएब

किवाड़

शोएब

मैं एक किवाड़ हूँ।

मुझ पर लिखते हैं।

मुझ पर कील से
छेद करते हैं।

मुझ पर लटकते हैं।

मुझ पर चूहा चढ़ जाता है।

मुझ पर खूँटी लगाकर
कपड़े टाँगते हैं।

रात को किवाड़ बंद
करके सब सो जाते हैं।

मैं भी सो जाता हूँ।

किवाड़

लेखन और चित्रः शोएब

लर्निंग कलेक्टिव, जे.पी.कॉलोनी, नई दिल्ली–110002

प्रकाशक : अंकुर सोसायटी फ़ॉर ऑल्टर्नेटिव्ज़ इन एजुकेशन

2014